

१०८०।१९७८।

॥श्रीनारायणसदस्यायग्रान्तः॥



"Joint project of the Rajawade Deendhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pralishthan, Mumbai."

श्रीमाहागणधिपतयेवमः ॥ संतवाणिईतरजन ॥ दिसति पैसमान ॥ परिसंतसदो बान्दधन ॥ ब्रह्मा  
 नंदें उलति ॥ ३ ॥ बक्संगेऽसतामराळ ॥ दिसेसरिख्वात्रुध्यधवला ॥ परिहिर आणिजळ ॥ करि  
 वेगळेहं सचि ॥ २ ॥ वायसांतवसेकेकिक्कू ॥ याचसारिखिदिसेकेवळ ॥ परिप्रवर्ततां वसेतका  
 ळ ॥ पञ्चमस्वरं आळविते ॥ ३ ॥ जंबुकवनालवाढवाक्किरि ॥ परियन्विपोवेलकेशिसरि ॥ द्वा  
 णमात्रेंगडविदरि ॥ होकेजारीनेराळ ॥ ४ ॥ टकांतमुक्ताफळजाण ॥ दिसेसरिरेवं सम  
 समान ॥ मुक्तजोहुरीकाटिविवुना की जान न डिवेशि ॥ ५ ॥ पाघाछातयरिसपुणे ॥ दि  
 सेतैसाचजउकीरिण ॥ परितोलोहाचिकार सुवणे ॥ लघुवर्णलयउनियां ॥ ६ ॥ करस्तुर  
 आणि मुत्तिका ॥ दिसेरंगयेकसरिख्वा ॥ परिमुगमदसुवाससकाकिका ॥ श्रीमंतास् ॥ ७ ॥  
 निववि ॥ ७ ॥ तकडुध्यवर्ण ॥ परिदुध्यगोउसककामान्य ॥ तैशिंसंतांचिंतपैपुण ॥

ईतरां समान नहण विं। ८। औसे संत बा नंद घन। मरा मवि जय परम पावन। करावया वै  
 सलेश वण। जया हरे करो नियं। ९। आतं कि कीं हा कांड कमका वरि। कीडे लवा गेह विन्न  
 मरि। परितो सुर स जं लरि। सहां च लुरि सात विज्ञे। १०। शोड शोष्य ईं कथा परि कर। १०  
 पं पा सरो वरि रघु विर। आला सज बज छह गा न। अयाये त्रिने त्रजया ते। ११। तो अखिसु  
 ख पर्वता वरि। उभे पांच वा ब्जर ले अव सारा। किंतो ते पांच हि के शरि। स्वई छाउ मे  
 ग कले। १२। किं कन कांडि चिर ले मंटि। चुंगे ते विरा जत। किं उग वले पंच  
 अहित्य। उद्या चक्षि यै हो चि। १३। किं सा ह्य कावया रघो लमाते। अवतरि लिं पंच  
 माहा भुते। किं ते पंच यत न शो भते। अखिसुर वर्प वै ता वरि। १४। तो पंया सरो वरा  
 चति रि। श्रीराम स्फटि कशि क्रेवरि। सौमि त्रविय माडि वरि। हिरठे उनि श्रौढ़ा। १५।

३

॥२॥

देखतांचिसौमित्रराघव ॥ अयजितजालासुग्रिव ॥ हणेहवक्षिनेदोघेमानव ॥ विरयेथे  
 पारविले ॥ १६ ॥ माझाधातकरावया ॥ शत्रुनेदिन्हुपाठउनियां ॥ हणेनिसुग्रिवतेथुनि  
 यां ॥ जाताजाळासद्वरा ॥ ७ ॥ चौधांसवपुसत्तोतेयुन ॥ पठतवेगेमित्रनंदन ॥ वेगे  
 उपवर्नेलंघुन ॥ समिरवेगेचालिला ॥ ८ ॥ मगरसवागधांउनिहनुमंता ॥ उभोकेळासुर्यसु  
 ला ॥ हणे लुंकाजिलोसयथार्थ ॥ कायविपरतदेस्विले ॥ ९ ॥ सुग्रिवहृष्णेदोघ  
 अनुर्धर ॥ दिसलिपरमप्रचंडविर ॥ यारविडाकिलांभयअपार ॥ माझेहृदईसंवरे  
 ले ॥ १० ॥ अजिम्यास्वब्देस्विले ॥ होधयनुघरसाह्यजाले ॥ वक्षिवधुनराजदि  
 धेले ॥ काळीहैचेहनुमंता ॥ ११ ॥ असणोहृदईस्विलेस्वब्य ॥ सवेच्चयावलेदोघेज ॥ १२ ॥  
 या ॥ परिमजधिरनधरवेजाण ॥ भयेकतनिव्यपिलो ॥ १३ ॥ यावरिबोलेवायुनंदन ॥

"Original manuscript from Raja Madhav Singh Library, Jaipur."  
 "Digitized by Sambodhak Mandal, Bhilai and the Yashwant Rao Kankotri Sanskrit Library, Ujjain"

अस्मिन्नस्तां वैदेह्यजपा ॥ लुतां तर्सि हालाउन ॥ लुडवारहुं सुग्रीवा ॥ २३ ॥ लरिहे पंपानी  
 रिहो देहजपा ॥ बैसलेविरहै दिष्टमान ॥ किं ब्रह्म्यति जाणि सह स्त्रनयन ॥ लैसहो देहिस  
 लि ॥ २४ ॥ किये कलपस्त्रिये कउदास ॥ किये ब्रजो हार्ये विशाष ॥ किये क्रुप्यये क्रुयश ॥ ते  
 सहिसति देहजपा ॥ २५ ॥ किये क्रज्ञाने क्रविज्ञान ॥ ये क्रज्ञानं दये क्रसमाधान ॥ किये क्र  
 सगुणये क्रनिर्गुण ॥ दोक्की स्कले पेहरीरा-  
२६  
 ॥ ये क्रसाधक्रुयक्रुमिष्ठ्य ॥ ये क्रवैराग्यये  
 क्रबोध ॥ ये क्रमोह्यये क्रह्मानंद ॥ लैरे दाचहि सति ॥ २७ ॥ यच्चिया आगमनिपाहि ॥  
 आनंदहाटलामाझे हहडै ॥ याचासमावारलवलाहि ॥ जाउणि जानां जाणितो ॥ २८ ॥  
 यच्चिया बोलावरन ॥ क्रक्कले त्याचेबंलरज्ञान ॥ स्वाद्येतां रसपुर्ण ॥ चतुरडै सावो  
 क्रवे ॥ २९ ॥ अस्त्रणादयावरन ॥ रजनिसरे क्रक्कज्ञान ॥ किं हाहाक्रवसरतां अम ॥

५

११३॥

शांतज्ञाताज्ञाणिजे ॥ ३० ॥ किं लबनर्थं समया वत्तन ॥ जाणि जेबं धुमित्रजन ॥ किं ईद्रियनि  
 ग्रहेपुर्ण ॥ योगे श्वरज्ञाणिजे ॥ ३१ ॥ दयेवरनिक्षेपेशानि ॥ कितकीवरनिक्षेप्यति ॥ किं  
 वेदानश्रवणं निर्वति ॥ हृषाबाणलिङ्गाणिजे ॥ ३२ ॥ त्रेमरसावरनिभक्ति ॥ निरापेक्षा  
 वरनिविरक्ति ॥ किपावलाजदयमुक्ते ॥ ३३ ॥ तैसेत्याचेऽन्तरसम  
 स्त ॥ मिलणि तों तुराहस्वस्त ॥ जीरते यवसविपरित ॥ हस्तसंकेतदाविन नुते ॥ ३४ ॥  
 औसेबोलोनिहनुमंत ॥ पंपातिरासु बालावरिता ॥ वटहक्षानकिरद्युबाध ॥ पृहुडला  
 असेश्रमेनियो ॥ ३५ ॥ स्फटिकशिक्षाहै ॥ ३५ ॥ मान ॥ जेविशेषतल्पकश्रुम्बवर्ण ॥ त्या  
 वरिश्रावणरिनेहना ॥ विराजमानदिसतस ॥ ३६ ॥ तवंत्यावटावरिहनुमंत ॥ कोतु ॥ ३६ ॥  
 केवरनिउडाणकीरत ॥ लक्ष्मियांरद्युबाध ॥ ३७ ॥ औसेहस्वेनिवानर ॥

सैमित्रशिदविरस्तुविरा। पैलपाहें लोकपिविर। ॥३८॥ जककर्ता  
 हहेमकौपिन। वज्रबंधनचक्रमहन। माझेचितज्जेहें करन। यशिदेखेनिभरलेंज  
 से। ॥३९॥ मालेचेवचनहनुमत। आवितहाहृदयान। जोवोरखेलकौपिनगुस। तो  
 चिखामिलुझाअसे। ॥४०॥ तेप्रत्ययालेसकुळ। परिमाझेबजुलबढ। हाहसतो  
 कोमक। तमालनिक्षाडिरा। ॥४१॥ जायपरिमआगेंबढ। स्वामिसजसावेब  
 हुसाल। मगवटशारबामोडुनिसबन। रामावरिटकिल्जा। ॥४२॥ तेहेखताउनिव्व  
 डिवब। चायशिवेगिचढविगुण। मगबालकौशनानंहन। स्थिरराहेनावेक। ॥४३॥  
 बाकाकौतुकपाहेसावार। यावरिकायटंकिशिशार। उत्ताणापहुउलाराघवेङ।  
 तोंशारवासवरआन्नावर। ॥४४॥ कोहेडिहेडेअवसृंग। शारवातोडिवरन्यावर।

The original manuscript page number is 6A, located in the top left corner of the page.

(5)

उडेनिगेलितेअवसरि॥ त्रणातुल्यतेधवो॥ ४५॥ अणिकीहिवक्षपादाण॥ वीरटकितवा  
 ॥४॥ युनंदन॥ असोकोशल्यागर्सेरल॥ कोंदेडत्तनिउडवि॥ ४६॥ मगरजिनलाहनुमंत॥ सो  
 डितलेकापंचपर्वत॥ तहिनउरेचिरपुवाथा कोतुकेहासततेकाढि॥ ४७॥ मगरधु  
 नाथयेकबाण॥ चपिंताविलानरुगतास्त्रण॥ पंचपर्वतपिष्टकरन॥ बाणगगनम  
 हिल॥ ४८॥ शरपिस्यारालागलकिंचित्॥ लणउडोनगलाहनुमंत॥ गगनिगरगरो  
 ओवत॥ व्राणहोतकासाविस॥ ४९॥ नतवत्तिंपडतांत्रण॥ तेजुमिशिनपडमागु  
 लन॥ त्यापरिवायुनंदन॥ कासाविस्यक् तस् ॥ ५०॥ लनकपवनधांवेतेसमई॥ जो  
 लजधरिलादृढहृदई॥ लणोबारेशरणरवलहिं॥ रामचंद्राशिजंर्दिकं॥ ५१॥ ह ॥ ५१॥  
 अवतारलाङ्गशार्दि॥ जाणहिराब्धिचाजार्दि॥ दृढलागत्याचेर्दि॥ कायावाचामानसे॥  
 ॥५२॥

॥४०॥१९॥

SA

मगश्चीरामाशिहनुमंता ॥ येवनिलोटांगणाघलिता ॥ मागुतिउडेनिधरिता ॥ श्रीरामचरण  
सप्रेमं ॥ ४३ ॥ उगेनियांरघुविरा ॥ हृषीधरितावायुकुमरा ॥ येकजालाहरिहर ॥ जयजय  
कारकरिताति ॥ ४४ ॥ श्रीरामहणेहनुमंता ॥ ज्ञावरिशाशिअणिसविला ॥ तोवरिअस्ति  
ईतबता ॥ बद्धाणेवअणिविडई ॥ ४५ ॥ केकहृषीचापुर्णपिंड ॥ अंजनिहातिंपउलाज  
खंड ॥ तोहविरजन्मलाप्रचंड ॥ राघवाहनपुंविच ॥ ४६ ॥ असोजोउनिदेहिकर ॥ ह  
नुमंतउजाभसेसमोरा ॥ हणेहरामकरणसमुड ॥ जगहोधारादिनबंधु ॥ ४७ ॥ हेरा  
ममुवनसुदरा ॥ हेरामजनकजावरा ॥ कुरामनवपंकजनेत्रा ॥ पुराणपुराजगहात्म  
या ॥ ४८ ॥ परमभक्तजायोना ॥ हनुमंतशिष्ठेलस्तुमण ॥ कर्मिधरनिवायुनंहन ॥ शिता  
वद्धभैवेसविला ॥ ४९ ॥ रामचरणचुरितमासति ॥ हणेरघुविराभैक्येकविनंति ॥ पैल

६

१४५

क्रुषिमुखयर्वति ॥ वसेकपिपतिसुग्रिवा ॥६३॥ अभयवरदेशिलट्यातें ॥ तीरजातोभेट  
 विनतयातें ॥ वहुलकामतयाचेनिहातें ॥ पुढेसाधेलश्रीरामा ॥६४॥ मगबोलेरघुनंद  
 ना ॥ सुग्रिवहाकाणाच्चाकोणा ॥ हनुमंतसागपुर्वकथन ॥ सावधानपरिसावें ॥६५॥  
 क्रमक्रोडवक्रितांष्माना ॥ व्रेमोदक्षबिंदुनविंहुवा ॥ अंजुक्तिपृतांपुर्णा ॥ रक्षराज  
 जमला ॥६६॥ तोब्रह्मयाचाप्रियवनवा ॥ वाल्मीरवेशबद्धगहना ॥ हिंडतांवनउ  
 पवना ॥ शिवलोलोकाप्रतिगोला ॥६७॥ वेलेरम्यसरोवर ॥ भौंवतेसदासफङ्क  
 लतवरा ॥ परितेथेंश्रापदुर्धरा ॥ अपरोक्षाहातापुविं ॥६८॥ जोनरझेविलयेधिचंपा  
 णि ॥ तोनारहोईलततक्षणि ॥ हेतरक्षराजनेणोनि ॥ उडिडिवनिघातलि ॥६९॥ ॥५॥  
 श्वानकरनिनिघातांबाहुरा ॥ जालेस्त्रीयचेपैहारिरा ॥ रंभेहुनिपरमसुहरा ॥ होयविचित्रतेकाकिं  
 ॥६०॥

तोमित्रईददोद्यजणा॥ अठेसुंदरस्त्रिकरंहणोन॥ तवतोब्रह्मपुत्रलाजोवा॥ स्त्रिहोउनिवैस  
 लास॥ ६८॥ नदेतयशिसुरत॥ मगदेद्यित्यग्नेरेत॥ अधिशक्तवियमस्तकिंपउत॥  
 वक्तितेष्ठेजन्मला॥ ६९॥ मागुनिसुर्यविर्यपउत्तिप्रिवेरि॥ तेष्ठेसुग्रिंवजन्मलालेअवस  
 रिं॥ विरंचिपाललाजउडकीर॥ तोपुत्रनारिजलाभास॥ ७०॥ मगलेषोद्यार्थुनिपार्वति॥  
 उश्रापमागेपुत्राप्रति॥ कामिनिभावहरनिमागति॥ पुत्रकेलायुवेवत॥ ७१॥ होद्योत्रजा  
 पिसुता॥ घउनिगेलापञ्चजात॥ मगवास्तकरावयाअङ्गुल॥ किञ्चिंदानगरस्त्रिये  
 लें॥ ७२॥ धाकुटासुग्रिंववडिलवक्ति॥ लस्तराजघेउनितकाकि॥ किञ्चिंदेवेराजभु  
 मउक्ति॥ तेषोकेलेबहुकाळ॥ ७३॥ वक्तिसुग्रिंवाशितवत॥ लहराजमिमातपिता॥  
 पुढेवतिक्तिदिउनिराजार्थो॥ धरिलेष्ठेत्रसुमुहुतै॥ ७४॥ कसनियांयोगसाधन॥

The Poem is written in the script of Nandarl, Dhule and the Nasik area.  
 Author: Chidanand

१८५॥

रक्षराजपवकाब्रह्मसदन॥ पुढेवाक्षिसुग्रिंवदोद्येजण॥ वंधुसमावसाररवे ॥७५॥ ईंडेवाक्षि  
 शिवित्तयमाका॥ हिथलिह्नणोनिलोसबका॥ समरिंशत्रुहोयनिर्वेळ॥ वाक्षिप्रतापदेख  
 लोगज्ज्ञसुर्यसुग्रिंवधीरला॥ आणुनमाज्जहालिदिधला॥ तुसांवाक्षिसदांयाता॥ ह्नणो  
 नियांप्रार्थिते॥ ७६॥ सुग्रिंवभाणिवाक्षिमध्या॥ वेरलागेरेराङ्गसंमध्यं॥ पुढेसुग्रिंववा  
 क्षिक्रोध्यं॥ वधावयाध्याविनला॥ ७७॥ सुग्रिवानीस्त्रितमातपवंता॥ वाक्षिनेघातलिघना  
 ता॥ सुग्रिवंथीरलाक्रृषिसुखपर्वता॥ युध्यतात्त्रघमासां॥ ७८॥ मासिसुर्यंद्यतलिभाका॥  
 किंतुसुग्रिंवच्चिपाठिराख॥ औसेंओकलाजपाइयानायक॥ कायबोलताजाहाला॥ ७९॥  
 हुबुमंताभाक्षेपुर्ण॥ मज्जबत्येत्प्रियसुर्यनंदन॥ सखरजाणिबोलाउब॥ भैटिस ॥८०॥  
 मनउतावेळ॥ ८१॥ तयाचाशत्रुवधुन॥ याहिरैइनछत्रसिंकासन॥ त्याउपरिडानकिन्चिद्गल॥

शोधुनकाउसंक्षिप्ते ॥८२॥ औसंबोलतो जनकजामात ॥ लेधुनउडोनहुमंत ॥ येउनिसुनि  
वस्तिसांगत ॥ भाग्यअङ्गुलउद्देश ॥८३॥ शिलवियोगेंदुःखीरघुस्तिराज ॥ रामवियोगेंदु  
हुरविसहज ॥ तरियेकयेकाचेपुणकाजाकराजातो परस्परे ॥८४॥ औकोनिमारातचंव  
चबा ॥ जानंदेनाचेसुर्यनंदन ॥ हनुमंतशिखनकियुन ॥ पठित्यचिदापटिल ॥८५॥  
रघुनाथप्राप्तिरितत्वता ॥ तुंसहदुरमास समर्था ॥ कायउतराईहोउत्तातोउपका  
रसर्वदानविसरे ॥८६॥ दशरथाल्मज चपति ॥ यचिपुर्विक्षेपिलिकिति ॥ पंचवा  
टिसक्षरनिवस्ति ॥ पशितासनमारले ॥८७॥ असोधुनिवान्नरांचेभारा ॥ नकनिक  
जाखुवंतविर ॥ सुग्रीवजालाडेथेंरघुविर ॥ भुवनसुंदरहेखीछा ॥८८॥ कोटयानुकोटि  
हज ॥ वसनवोवाकोवेजाप ॥ तमाकनिकस्वरपस्युण ॥ सुग्रीवेत्रिविलोकिला ॥८९॥

४

८५॥

लोटांगणधलितसुग्रिंवा। नक्निकादिवानरसर्वा। बैसेंदेखतांशिलाधवा। पुढेधावत  
 मेटावया॥ ९०॥ धरोनियांदोहिकुरा। उठविलाजानुकुमरा। हृदईधरितरघुविरा। सु  
 स्वअपारसुग्रिंवा॥ ९१॥ अत्यंतजाताहृष्टातुरा। त्यासभेटरहितसागरा। किरीर  
 दियाशिबपारा। द्व्यधरिसापउले॥ ९२॥ त्रिभाक्षाचेघरशोधित। कन्महस्यां  
 लाबकस्मात्॥ त्रिचुक्कलेवाक्कर्मारचना ननियसितिनेन॥ ९३॥ त्रित्तुषाकांत  
 पटलावनि। त्यापुढेलोटमंहकिनि। ते संस्युग्रिंवामनि। त्रह्मानंदउच्चवक्ला॥  
 ॥ ९४॥ जिवशिवबैक्यभाव। तैसेंमित्तनमवा। तेकंविमानापुढेदेव। सुमनसंजा  
 रखघेति॥ ९५॥ नक्निकाङ्गुवंत। आणि किहिवान्नरसमस्त। तयांशिरघोतमजा ॥ ९६॥  
 कंगात। आनंदगगनिनसमाये॥ ९७॥ हनुमंतेतेवेढे। पसरिठेवक्षजहाके॥

मध्ये आब्धग्नी स साक्ष केले ॥ दोघे हिते थें वै सवित ॥ १७ ॥ सुग्रिव बाणि र चुनाथ ॥ उभय  
 ता सहणे हनुमत ॥ येव येका चाका योर्धे ॥ सात्य होउ निसाधावा ॥ १८ ॥ र चुनाथ मृण  
 र अव बाणि दारा ॥ सोड उनिदेतो रवि कुमारा ॥ फामाशा विर्धा र खरा ॥ उद्देश्य पाहाल ॥  
 ॥ १९ ॥ अर्के जहणे जेणे लिंगिता ॥ व्याधि संकार तत्वता ॥ अयोध्या विर्यै इन जातां ॥  
 मंग बृहस्पति निसम वेता ॥ १० ॥ अैसै अकर उत्तरा ॥ जुभुः कारहे तिवाब्बरा ॥ तेणो जादें पै अे  
 बरा ॥ दण्डाणि लेते समर्त ॥ ११ ॥ सुग्रिव सह पार उवंदवा ॥ काळय क सुंदर लडना ॥ गहस  
 घेउ न गेता जाणा ॥ निराकर माँ त्वरे नोरा ॥ १२ ॥ ते समस्त देरि विलिन यनि ॥ आकंहत कर  
 णा वचनि ॥ हृषीरा मां वधां वनि र्धाणि ॥ व्यापयाणि कृत्या करा ॥ १३ ॥ हृषीपरि हृषी  
 सौमित्रा ॥ धां ववेगं यरम पवित्रा ॥ मागुति हृषी स्मर रिमित्रा ॥ राजि वने त्राधां ववेगि ॥ १४ ॥  
 लिणे उत्तरि वस्त्र फाडुनि ॥ जामरणे रकि लिंगां धोनि ॥ अहिते ठविलिं जतन करनि ॥

रामजैकोनिविस्मित॥५॥ नष्टलिनवलसांगलिवान्नर॥ सत्वरभाणिलेअकंकार॥ द्येउनि  
 आलावायुक्तमर॥ देतरधुविरकीरतेको॥ ६॥ लोहेलोहेग्राधिकासेति८॥ आमरपोवो  
 करिविलिसमस्त॥ आहात्रियेह्यणानिरघनाथ॥ शरिरटाकिज्ञशूणिवरी॥ ७॥ हृदृद्ध  
 रनिअकंकार॥ शोकार्णविपउलारधुविर॥ सद्गुहोतिवैब्जरसमस्त॥ नयनिनिरलो  
 टले॥ ८॥ आरडनिशत्तेच्युण॥ विरायकरिरघुनेहना॥ धांवोनियांठक्षुमण॥ द्यरिचरण  
 रघुपलिच्च॥ ९॥ लक्ष्मणाशिल्यारघुकि  
 रवयावोकरखहेअकंकार॥ होयकिनकेति  
 साचार॥ पाहेवरवेवितेकुनि॥ १०॥ सोमित्र  
 कारघ्येउनि॥ सादरहोउनिपाहेनयनि॥ ल  
 णहेनेपुरेश्चेत्तेच्चरणि॥ वोकरिविलेसाचपा॥ ११॥ नेपुरेवोकरिविलिसाचार॥ वरकडने  
 णोमित्रिचार॥ रामस्त्रणेनिरंतर॥ ज्ञानकिज्ञवकहोतासकि॥ १२॥ सोमित्रस्त्रणेशिता ॥ १३॥  
 माउलि॥ म्याकाधिंजाहिंयुर्णपाहिल॥ त्रिकाळनमनाचेवकि॥ नेपुरेद्दरिविलिसाचारम्य॥ १४॥

॥आग॥१७॥

१८

अैसें बोलता लक्ष्मण। आने हलार द्युनंदन। त्रयो वारे तुं दिव्यरत्न। वैराग्य वैराग्य रिंचे। १८ तु  
भक्त सरोवरे चारा जहंस। किं ज्ञान मुकाफ क्षमादुस। किं इत्तु विपि बहुतांश। सदां निर्दोष सु  
र्य जैसा। १९। सुग्रीव द्वयण रवि कुछ मेडण। उरिमि झान किं जटविना। लरिमि जो गिनये  
म्यातना। कृन्मर्यंते निर्धार। २० द्या न किं ज्ञान बुवंता। माझे प्रधान जग विरव्याता। अुग  
कृहस्थण न लागतो। २१ चलो निधा क्लिं पालथ। २२। आता र द्यु पति तुजि च बाण। स्वर्ग  
स्त्रय पाता क्लमे हुवा। झान किं जाणि ए हु प्रभाण। सत्य सत्य त्रिवाचा। २३। मग बोले मख  
पाकण। सुजता रारा द्यु दिघ न्मावां तुन। शीता द्यु धन करितां तै आण। श्रावण रिचि जा  
ण पां। २४। तुझे कार्य बहो तां बाध्य। काहन कीरति ता सुध्धी। हु मद्दि प्रति ज्ञानि सु  
ध्य। काक्त्र ईरु क्लेना। २५। गुलघापे विष ज्ञान। किं जावाडि विन भजन। किं प्रमेविष कि  
तन। किं अनुष्टान ज्ञान। २६। किं अलियि विष भोजन। किं विरश्री विष रण। किं वि

(१०)

॥९॥

प्रज्ञेसाविद्येविष्णु ॥ सर्वजनविनिर्दिति ॥ २३ ॥ तेसेंतुश्चकार्यवहोतां ॥ शितासुध्यनकरिस्तत्त्वा  
 ता ॥ जेसेबोलतांस्युनाथ्या ॥ वीरश्रिजंगिदाटलि ॥ २४ ॥ चढविलाचापाश्चिगुण ॥ त्वये  
 वा लाविशक्रनंदना ॥ सुग्रीवंवथावोनिष्ठरिचरण ॥ केरजोडुनिविनवित ॥ २५ ॥ ह्ययोवा  
 किचामारञ्जनिवारा ॥ आपणयुध्यजकरवरमार ॥ अक्षस्मानटकिहरिरा ॥ तीरच्छसं  
 क्षारहोययाचा ॥ २५ ॥ मंगक्षजनविनिपाता ॥ सुग्रीवाशिपुसेवतात ॥ त्वाशिर्दतुकं  
 बछप्रासा ॥ केसनिपैजाले ॥ २६ ॥ सुरवलक्ष्मानगत ॥ ह्यसासुरवगदेत्या ॥ त्वत्त्वे  
 पोटदुदुभिसुता ॥ परमवरिष्टजनवला ॥ २७ ॥ माडाउब्मतमेयपानि ॥ कृठहमाजवव  
 याहिंडवनि ॥ परित्याशिसमरंगाणि ॥ चावाक्षाणिभेटवा ॥ २८ ॥ सुग्रीवादुजनाकि  
 शिवर ॥ पडावयाकायविचार ॥ तेचकथनसविस्तर ॥ यससंगलाजाहला ॥ २९ ॥ म  
 गदेत्यगलायेमाजवकि ॥ ह्ययोमङ्गाशिमाजविंयुध्यफकि ॥ यसत्वयकिस्किदेशिवा ॥ ३० ॥  
 विंश्च ॥ त्वाजवकि जायदु ॥ ३१ ॥ रागेंआलाकिस्कोदजवकि ॥ डैसामुशक्रव्याघविंश्च ॥

व्याघ्रचिपाहावयाजाक्षि। जंबुक्कैसापातता॥ ३१॥ देत्यहान्नफ़ोडिततेवेक्षि॥ औक्तांधा  
 विलविरवक्षि॥ जैसामर्गेद्रकवद्यालि॥ मतांगदुरिदेस्वता॥ ३२॥ शतयोजबेशीररवि  
 शाक्षि॥ वाक्षिनेपदिंधरिलाताक्काक्षि॥ पिरउविभापटितांसवक्षि॥ भुमेऽद्वदणाणिले  
 ॥ ३३॥ कायुलुनिगेलाप्राण॥ मगप्रेताचभ्रावुन्ना॥ रागेदिथलमिरक्काउन॥ अखि  
 मुरवपवेतावौरा॥ ३४॥ शतयोजनेकक्षिवरा॥ बच्चाशममोडतेसमय॥ तेधेमुव्य  
 मालगुक्कृष्णश्वरा॥ लेणोप्रापदिथक्का॥ ३५॥ यापवंताशिस्पतांशक्कनंदन॥ ताक्का  
 क्काइलत्यावाप्राण॥ दुंदुभिचंत्रेत्तेज्जाग॥ पउलेबाहुजव्यपि॥ ३६॥ मगमयासु  
 रदुंदुभिचासुत॥ पित्रुसुउद्यावयापातलातथ्॥ पतंगजन्निरिंमागत॥ सुउरकाउव  
 वेनाचा॥ ३७॥ किसपोचासुउसमुक्षि॥ सुपणाशिमागतज्जक्षि॥ तेसामयासुरतका  
 क्षि॥ वाहुवक्षिसयुध्याते॥ ३८॥ शक्कसुतधविब्लक्कात्वरित॥ जैसेंपर्वतावरिवज्जप

पडता॥ तेसामयागिमुष्टिघात॥ हृतांवमितरक्ताशि॥ ४३॥ (पावाक्षविवरद्वारे)। मयासुरप  
 कालात्मरे॥ त्याच्यापाठिंलग्निशक्तकुमेरे॥ ध्यांवधेतवियाताक्षिं॥ ४४॥ विवरद्वारिंभिरक्षण  
 । (राघवाबैसलोबहुतदिन)। तोंयक्षगंधवीमिक्षाग॥ क्रिस्तिंददेहेऽधाविब्लूले॥ ४५॥ रा  
 याविष्णकोणराखेपुरि॥ ध्याक्षेदुर्गसातिंदवाक्तरिं॥ व्रधानप्रज्ञा तेवैज्ञसरि॥ मजसो  
 गतिगाहाया॥ ४६॥ (मगविवरद्वारे) क्रित्यापर्वता॥ क्रिस्तिंदक्षिपावल्लोतरिता॥ श  
 त्रुआटेनिसमस्ता॥ प्रज्ञासुखिकास्तिल्लो॥ ४७॥ विशंलिमासंपर्यंता॥ वाक्षिवि  
 वरांलज्ञालागुस्ता॥ (मगविवरद्वारे) समस्ता॥ त्रूपतिशक्तसुतनिमाला॥ ४८॥ सक्त  
 क्षिंजायहक्षणिक्षेठें॥ वाङ्मुद्भवमर्जादधला॥ तोंमयाच्येशिरधेउनितेवक्षा॥ वाक्षिवि  
 रपालला॥ ४९॥ (विसमासतोन्निराहारा)। त्रिष्टोनदिसेविवरद्वारा॥ परमउत्तरलामु  
 खवंदा॥ धाविराविरजाहाला॥ ५०॥ (व्यर्थचबंधुश्वेहविष्णा॥ लागवेहुंशास्त्रप्रमाणा॥

॥४॥०॥१९७॥

११८

दुर्मुखिस्त्रियाकुना॥संव्यासयहणकरोते॥४७॥गुरस्तजितेज्ञानहिना॥त्रितिविषमित्रजा  
ण॥अैसेबोलोनशक्त्सुन॥शस्त्रघितनिधींविल्लाला॥४८॥मगनकनिक्त्याकुवंता॥प्राण  
माद्याहनुमंता॥पञ्चघितनिपठारेवरिता॥तवनिष्ठितनेहिकोष्ठि॥४९॥हिरोनिधेत  
तिवक्त्विदारा॥नित्ययेतनिकरिमारा॥मगत्रष्टुप्तिमुखपर्वतीशितवरा॥केवाथाराजा  
हियेथे॥५०॥वद्धिशिखसेतेथेश्राप॥यत्तागिंराहुंसुखरपा॥सामासांयुध्यजमुप  
॥होद्धांशिहोतेरथोतमा॥५१॥आस्त्रिराघ्यमानवद्धि॥परित्याचागङ्गविजयमाढ  
॥तेषोप्रतापत्याचासवद्धा॥शत्रुशिष्ठुसुट्टजस॥५२॥विक्कविशमूलाक्षसात्॥  
येवबोणद्धित्तोधनुष्यमंता॥त्याचाहातंवद्धिसमत्या॥भविष्यपुविक्तेलेहुं॥५३॥  
अैसेबोलतांसुर्यसुता॥धनुष्ययोजिअवनिजाकात्ता॥अर्धचंद्रवाणवरिता॥आक  
र्णवरिवोड्डिला॥५४॥माउत्तेहृदयदेवदेहाण॥पठिष्ठिउज्जाकेलालक्षुमण॥

(12)

१९१।।

त्यावाचरणञ्जुष्टरघुनंदन॥ पायांस्वालेरगडिल॥ ५५॥ दृडपिनांशोषचरणञ्जुष्ट॥  
सातहिताडजाठेनिट॥ येकांचिकाणेसपाट॥ सातहिकेलराघवे॥ ५६॥ सातताडझे  
षपृष्ठवकरि॥ यालुग्गांनिटावलेस्तडवरि॥ तोदुंदुमिप्रेततेबवसरि॥ मित्रसुतेदा  
खविले॥ ५७॥ हेतोउचलिलपुरषार्थि॥ वट्ठिच्छमरणत्याचेहुति॥ चरणांगुष्टर  
घुपति॥ प्रेतढकेलिततेधवां॥ ५८॥ नरणब्राह्मउडान॥ पडलेदिगांतराजाउन॥ अज्ञुत  
प्रतापदेखोन॥ सुग्रिंवचरणालागला॥ ५९॥ क्रमक्षदक्षस्त्रयाधन॥ वर्षेस्वानदा  
जिवन॥ तेकणेक्षारंधेउन॥ सुर्यसुतरसडाला॥ ६०॥ रामचंद्रामुलटाकिले॥ तेण  
सुग्रिंवकणेक्षकोरथाले॥ किंतेकणीयाचक्षक्षत्यजाले॥ श्रीरामवचननिधाने॥  
६१॥ मगूवासरमणिचासुत॥ दशाकंठरपुरिष्विनवित॥ त्वयेविषकंठहृदयायेक  
हेत॥ पुणमाज्ञाकरिकां॥ ६२॥ तरिक्षबक्षस्मातटाकुनिबाण॥ ध्यावाडिवाकिचाजापा॥

अवश्यस्त्रणेऽगमोहन।। भक्तवचनपाकका।। दृश।। मगकिस्तिंदेसमिपसुर्यकुमर।। कर  
 लघोरशुभ्रुःकार।। दणाणितजवधेनगर।। ईदपुत्रहचकला।। दृष्ट।। गठाघालुनिविजय  
 मात्र।। वंगीधांविनलावाद्विसबढ।। न्यणोवरिचालाजियोरक्तन्दोक।। क्रोणसाह्य  
 जाहाला।। दृष्ट।। ताराम्बणेस्वामिपर्यंशि।। जगहोलाहोतापारधिशि।। तेष्येवोल्तत्त्वे  
 तत्रुषे।। रगमसुग्रिवाशिसाह्यजाला।। दृष्ट।। नविर्याङेद्राभवथारा।। अपणनवजावे  
 वाहेरा।। न्यणोनिचरणशिल्पांगकितारा।। परिश्वेत्सुलनमनिते।। दृष्ट।। ऐकेनिकुंड  
 राचेयुर्जनव।। कैसाउगारहेपंचानवा।। सुग्रेवंस्थिजालाचालोन।। मगत्रादुक्तकेसा  
 स्थिरवा।। दृष्ट।। नुष्ककाननित्रक्षयाग्न।। कैसाराहिलशांतिधरसन।। असोसहस्राक्षनं  
 दन।। तारेप्रतिबोलिदा।। दृष्ट।। न्यणप्राणप्रियेपरियेशि।। वर्षमासायेतहोतायुध्या  
 शि।। अजिजालादुसरदिवशि।। उद्धासेंद्रीगर्जता।। दृष्ट।। वाईशरत्यविजर्जरा।।

१३

११२॥

त्वेषं च माद्यं हि जाले चुरा ॥ त्यगिसा ह्य जाता वायु कुमरा ॥ त्वेषे विरजणि लोके पिणि ॥ ७१ ॥  
 दीरता रतु बाणि जंगदा ॥ सुरवेजे गिरा ड्यपदा ॥ अजि सुग्रीवा चाकी रनवधा ॥ त्वैस्वर्य  
 न माधारा ॥ ७२ ॥ नहि लोस्मेटहेचि ॥ बोलो निवाकि उठै सम्बि ॥ जैशिडिडिपंचान  
 न चि ॥ यहि स्तिते लहुनि ॥ ७३ ॥ इसापर्वता वरिपर्वत पडिला ॥ त्वैसा सुग्रीवा वरि जा  
 हठला ॥ आवेदाङ्गो वैततेवेक्षा ॥ कोपालग्नि लघरत्रि ॥ ७४ ॥ मङ्ग्युध्य होतां भनि  
 वारा ॥ युसपाह आवनि जावरा ॥ तोहो द्वच सरिखविरा ॥ कोणावरि दारटाकावा ॥ ७५ ॥  
 मारति लग्न अयोध्या पति ॥ हुदो धर्स दिसलि ॥ मग सुमनहार लीरत गति ॥  
 सुमिर सुलेगुफिला ॥ ७६ ॥ सुग्रीवा च्याग काघालि तेहणि ॥ दुरोनिविलोकि ब्रव  
 न्दहानि ॥ दोधहाकोदेति गगनि ॥ व्रति धवनि उठसा ॥ ७७ ॥ वड्राअसे करेरा ॥ लाणि त  
 ते कामुषि नहरा ॥ जुगो ककापते कासमया ॥ दणाणि लपाता क्षे ॥ ७८ ॥ शतयोजने जाउपडोनि

निजबद्धलिलउच्चरूपेनि॥उसोक्तंनरधांवतिगगनि॥सुधापणिपक्तताति॥७९॥  
 चक्राकारफिरवितिपर्वता॥नक्तक्तांरकितिअकस्मात्॥हृषणक्षणासुकंपहोता॥यीवा  
 जोगद्द्वयसरसावि॥८०॥हृदईसमर्पितिकड्डमुष्टि॥तेणउडगणस्विराष्टि॥गगनिदेवांचि  
 याथारिा॥युध्यद्विष्टिविलेकिति॥८१॥असौकोंसहस्राक्षसुता॥सुग्रिवसिहणिमुष्टि  
 वाता॥कासाविस्यसुयसुता॥मगयाहुतरामाकेडा॥८२॥विरसांपडलारणमडकिं॥बं  
 धुस्तिवाटपाहुनेकाकिं॥नैसासुग्रिवहृदयकमकिं॥दिनबंधुतेजाठवि॥८३॥हृषणकों  
 नपुरेचिमाज्ञाजोगा॥उपाबकरिज्जवनडावरा॥जोविषकंठहृदयपद्मभंगा॥दशकं  
 ठमनज्ञो॥८४॥असोईकेउकोंजाल्लानदना॥तुणिरांतुनवोढिबाण॥डैशिकन्नातम  
 घातुन॥चपकावाहेरभनिवेड॥८५॥धनुष्यावरिघाडुनिबाण॥लक्ष्मसधिलेदुरना॥  
 वाकिच्छहृदयउनां॥अकस्मातसंचरला॥८६॥वायकेलोसाँगीतांसतेजा॥डैशि

मिध्यावरिपुडेदिजा। किकांडव्यदेवतां अरुणानुज। येउनिसउपिजैसाको। ८७।। किंञवचिभरिविघ्नपुडे  
 ॥ किंराउहमुखिंशारिसांपुडे॥ कितपत्नीयावरितांकड। व्यसनपुडेकामाचै। ८८।। कित्रियनेत्रिंचाय  
 द्वा। मनव्यावरिपुडेयउन। तैसावाकिचेहुदइंबाण। येकायकिसंचरल्ल। ८९।। माहाश्वरउनकिल्ल।।  
 कियविषातगजानिजाला। तैसावाकिनेदेहटाकिल्ल। ९०।। बाकिचादेहांतजायोनि।।  
 जवकिआलाचापपाणि। ईद्रतनुजेतेकाकिकरणि। कायबोलताजाहाल्ला। ९१।। तुंसत्रीयेकपत्नीश्वलि  
 दुसरिवरित्तिकां अपकितिः। अन्यायनसातांरुपति। वाणव्यर्थकांगकिल्ल। ९२।। तुंसत्यवचनियरावत।।  
 माहाप्रतापिरणपंडिता। तुश्चिअपकितित्रीकुन्नात। जालिसत्यराधवेश। ९३।। नहटकितांगकिल्ल  
 रारा। मगबोलेजानकिचावर। मक्किगिलुंपालखाइर। तुजकायरेहठकावें। ९४।। विरञ्जसेलत्यारिह  
 ठकावें। वनयरखुलचिवधावें। पारधियेस्तगसाधावें। पाचारावकासय। ९५।। तुपरमञ्जन्याइवान्न  
 रा। बंधुस्त्रीअग्निल। विलिसाचार। स्यांदुहुङ्डुजावयाअवतार। घेतल। अस्तरमक्किग। ९६।। औसतुंकातांतकाविं।।

© Bodleian Library  
 Stansheen Mandir, Bhule and the Kewantun  
 Project

॥आ०।।१७॥

(१८)

हर्दैसद्दरजातावक्ति ॥ लणेपिपावबजात्येवक्ति ॥ तुझेनिहस्तेवाधवा ॥ १७ ॥ धोरसुहताचेप  
वेत् ॥ दिश्मिरदेशितारघुवाथ ॥ मस्ससार्थकजातेयथार्थ ॥ नाहिजेतनिजभाग्या ॥ १८ ॥ यत्त्र  
मागेजनक्त्वंहिनि ॥ हशाग्रिवगेलायेउवि ॥ मस्यासाजपितोवाधोनि ॥ यक्षहणजलगतो ॥ १९ ॥  
क्षेमाडिहाटुन ॥ चतुःसुमुद्रिकेलस्तान ॥ पात्रवावरिजाणुन ॥ अंगदच्याबंधिता ॥ २० ॥ मग  
पौत्रसीनेभीहामागोन ॥ नेलादशकं क्षेषोऽउनामवक्त्रापात्कोष ॥ कायउशिरजाणावयाजा  
मालेकर्ममाहावक्ति ॥ तुजिझोवानाहिघटिल ॥ रात्रिवक्षेतयेवक्ति ॥ रन्हेक्तुनिउचंबठला ॥ २१ ॥  
तुझेहर्दैचाउपडेनिबाण ॥ आसांतुजसादयकरिन ॥ मग्न्यणेईद्रवंदवा ॥ औसेमरणमुठेनय  
॥ २२ ॥ तुझेहातेनिहात ॥ तुजवक्तिरघुवाथ ॥ औसेबोलतांशक्तसुत ॥ सुग्रिवजवक्तिपातला ॥ २३ ॥  
नेत्रिश्रवलिजक्तिदु ॥ उचंबठलाशोक्तिंशु ॥ मगवाक्तिनेत्रनिष्ठवंशु ॥ त्रिलिङ्गवक्तिवेसवि  
वा ॥ २४ ॥ काठुनियंविजयमाक ॥ धातलिसुग्रिवाच्यागका ॥ न्यणधन्यअनुजावेल्हाका ॥ द्रिए

१५

१९४।।

देखिलाश्रीराम॥६॥ अन्यथव्यतुज्ञं वैरा॥ अंतिहासविठारघुविरा॥ वैरनकेहारघेहुधोरा॥ मडलगिं  
 तुवांकेत्ता॥७॥ जातां शोवारघुनाथप्रिति॥ तुझिं करविसमस्ति॥ साद्यहोउनिसर्वार्थि॥ शीतासौ  
 लिसोउविजो॥८॥ जैसंशक्तनुजोबोलोवा॥ विठेकिंतराधवध्यान॥ तोत्काळहुसोउना॥ वकिजो  
 हालविहीहा॥९॥ विष्णुदुतयेउना॥ नेतृविमनिवेसउना॥ यावरितास्वेंसमाधान॥ रघुनंदनक  
 रिल॥१०॥ लेसुरसङ्घायपार॥ सतिपि सतिपाहर॥ ब्रह्मानंदेश्रीधर॥ अभंगचरत्रवर्णि  
 हे॥११॥ रामविजययथसुंदर॥ संमतवालोकनारकाधार॥ सहोपरिसोलचतुरा॥ ससद  
 शोध्यायगोउठा॥१२॥ छ॥१३॥ छ॥१४॥ छ॥१५॥ छ॥१६॥ छ॥१७॥ छ॥१८॥ छ॥१९॥



१९४।।



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)